Dr. Archana Bharti, Guest Faculty

MJMC/SEM 1/Paper 101

Date- 27/04/2021

SOCIOLOGICAL THEORIES OF MASS COMMUNICATION

उपयोगिता एवं परितुष्टि का सिद्धांत (Uses and Gratification Theory)

यह श्रोता–केंद्रित अवधारणा है। इस सिद्धांत में लोग मास मीडिया का उपयोग किस रूप में और क्यों करते हैं। इस सिद्धांत की अवधारणा सबसे पहले वर्ष 1959 में 'इलिहू काट्ज' (Elihu Katz) ने प्रतिपादित किया। यह अवधारणा सिर्फ संदेश–ग्रहण प्रकिया पर केंद्रित है। इस अवधारणा में लोग मीडिया के साथ क्या करते हैं। और माध्यम व्यक्तियों का किस प्रकार उपयोग करते हैं। इस अवधारणा के अनुसार मीडिया के जरिये व्यक्ति सामाजिक अंतःकिया करता है। मीडिया के द्वारा वे संतुष्टि प्राप्त करते हैं एवं तनावमुक्त होते हैं। इसके साथ समाज की समस्याओं से अवगत भी होते हैं। व्यक्ति को अपनी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मीडिया की आवश्यकता होती है। ये आवश्यकताएं हैं, वातावरण पर निगरानी रखना, समाजीकरण संबंधी कार्य, ध्यान बंटाने संबंधी कार्य आदि।

इस सिद्धांत के प्रमुख बिन्दु इस प्रकार है–

- श्रोता सकिया होते हैं वे मीडिया का उपयोग कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करते हैं।
- इस सिद्धांत के अनुसार मीडिया और श्रोता के बीच एक सीधा सम्बंध है।
- श्रोता समूह स्वयं यह स्पष्ट करें कि उनकी दृष्टि में मीडिया का उद्देश्य क्या है। शोधकर्त्ताओं का मानना है कि श्रोता मीडिया का उपयोग क्यों करते हैं और इस सम्बंध में उसकी अपनी धारणा क्या है।

व्यक्ति की आवश्यकताओं के अनुसार मीडिया अपने श्रोता और दर्शक के लिए सूचनाएं एकत्रित करती है। ये सूचनाएं उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं को पूरा करती है। जिसके कारण

लोगों को संतुष्टि होती है। इसका वर्गीकरण शोधकर्त्ताओं द्वारा किया गया। प्रसिद्ध संचार विशेषज्ञ डैनिस मैक्वेल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''सोशियोलॉजी ऑफ द मास मीडिया'' में इस बात का उल्लेख किया है कि मीडिया किस प्रकार दर्शकों को परितुष्टि या संतुष्ट करता है। इस सिद्धांत के अनुसार दर्शकों और श्रोताओं की निम्नलिखित जरूरतें होती है जैसे कि–सूचनाएं, सुझाव एवं समाधान प्राप्त करना, समाज और विश्व के बारे में जानना, दूसरों की समस्या को समझना, दूसरों से जुड़ा हुआ अनुभव करना, भावनात्मक शांति अनुभव करना, खाली समय का उपयोग करना आदि।

जन माध्यम व्यवस्था पर निर्भरता का सिद्धांत (Media system Dependency Theory)

यह सिद्धांत 'बाल राकेश और डीफ्ल्योर (Ball-Rokeach and Melvin DeFluer)' ने वर्ष 1976 में प्रतिपादित किया। इस सिद्धांत के अनुसार ''समाज के सदस्यों की मीडिया पर बहुत अधिक निर्भरता है। निर्भरता का सिद्धांत एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से सम्बंध, एक समूह का दूसरे समूह से सम्बंध और एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति से सम्बंध को प्रमाणित करता है। इस सिद्धांत के प्रणेताओं ने कहा कि आधुनिक शहरी औद्योगिक समाज में श्रोता, दर्शक मीडिया द्वारा दी जा रही सूचनाओं पर काफी हद तक निर्भर है। यह सिद्धांत समाज, व्यक्ति तथा मीडिया के बीच परस्पर निर्भरता के संबंधों की चर्चा करता है। इसलिए इसे मीडिया सिस्टम डिपेंडेसी थ्योरी कहा जाता है। यह दोतरफा निर्भरता पर आधारित संबंध होता है। मास मीडिया को श्रोता तथा दर्शकों और लाभ की आवश्यकता है, दूसरी तरफ व्यक्ति भी मास मीडिया पर निर्भर है। श्रोता तथा दर्शक समाज में मीडिया का सूचनाओं पर निर्भरता, श्रोता और दर्शक की अभिरूचियों पर आधारित होती है।

इस प्रकार ''बाल राकेश और डीफ्ल्योर'' का मीडिया निर्भरता का सिद्धांत त्रिपक्षीय सम्बंधों पर जोर देता है। जिसमें जनमाध्यम, श्रोता और समाज है। यह सिद्धांत उपयोगिता एवं परितुष्टि के सिद्धांत से भिन्न है। उपयोगिता एवं परितुष्टि का सिद्धांत संकुचित रूप से लोगों की व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं पर जोर देता है।